ISSN–2278-5655

AMIERJ

Peer Reviewed Journal

Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–X, Issues– V

Sep – Oct 2021

शिक्षा के परिपेक्षय मे लोकतांत्रिक क्रियाकलाप और गुरु की भूमिका

डॉ० नरेन्द्र कुमार पाल

सहायक आचार्य

शिक्षा विभाग

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालया (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) वर्धा

लेख-सार :-

वर्तमान वैश्विक परिदराशय मे ज्ञान के विकास की दिशा में अत्यधिक बल देते हुए अनेक परिवर्तन हो रहे है। ज्ञान और शिक्षा के इस क्षेत्र में लोकतन्त्र का प्रभाव देखा जा रहा है वैश्विक पटल पर ड्राष्टि करने से प्रतीत होता है की सभी देशों में लोकतंत्र का शासन व्याप्त है और जनतंत्र का अधिकार है। ज्ञान इसी इसी लोकतांत्रिक प्रवृत्तियों का विकास एवं विस्तार निरंतर करने में कार्यरत है। भारत में लोकतंत्र की प्रणाली 1947 के स्वतंत्र होने काठ ही भारतीय संविधान पारित होते ही लागू हुआ। परिवर्तन और स्वतंत्र के इस क्षण से वर्तमान समय में भी ज्ञान के गुरु का सर्वोत्तम स्थान रहा है जो समय समय पर एक मित्र पथ प्रदर्शक समाज सुधारक के रूप में भूमिका निभा रहा है। जिसमें वह अपने विद्यार्थियो तथा जनतंत्र को समुचित रूप से ज्ञान से पथ प्रदर्शन कर सके। लोकतंत्र समाज की वह उत्तम व्यवस्था से है जिसमें धर्म जाति लिंग भेद आदि पर ध्यान केन्द्रित करके प्रत्येक व्यक्ति को समाज में अपनी उन्नति करने के लिए समान अवसर प्रदान किए गए हैं। इस प्रणाली के अनुरूप प्रत्येक व्यक्ति अपनी कौशल एवं योग्यता एवं क्षमता के अनुरूप व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास एवं उन्नति को अग्रसर है।

मुखय शब्द : *शिक्षा गुरु लोकतन्त्र*

प्रस्तावना

वर्तमान आधुनिक लोकतान्त्रिक युग प्रवर्तमान है इस प्रजातन्त्र की समय समय पर संस्कृति के समन्वय से अनेकविध रंगो के समायोजन से नवीन व्याख्या दर्शाई गई है। पूर्व में प्राचीन समय में लोकतन्त्र का विकास हुआ था। पूर्व के समय में हुए लोकतन्त्र में देश और नगर के नागरिक राज्यो की सरकार और प्रशाशन में प्रत्यक्ष

भागीदारी के साथ प्रभावात्मक हिस्सेदारी निभाता था। मूलतः महान दार्शनिक प्लेटो के लोकतन्त्र के समर्थन से इसे प्रेरणा मिली। दर्शिङ्क प्लेटो ने अपने जीवन के अंतिम समय में लोकतन्त्र के समानान्तर दार्शनिक शासन प्रणाली को तरजीह दी थी। जिसके परिणाम स्वरूप लोकतन्त्र का उस समय का प्रवर्तमान स्वरूप धुंधला द्रशयमान प्रतीत होने लगा था। प्राचीन समय की वह प्रक्रिया या आंदोलन ईशा के नेतृत्व में हुआ था। जिसे स्पष्ट होता है की ईशा ने धर्म के क्षेत्र में लोकतन्त्र का समन्वय करके लोकतन्त्र को महत्व दिया। उस समय भी लोकतन्त्र पे प्रहार होते रहे और उसका विरोध भी होता रहा। परंतु "रोहिणी" नामक महान दर्शनिक ने लोकतन्त्र के प्रति समझ और विस्तृत द्रष्टि का अनुभव करते हुए पूर्ण समर्थन किया। अर्थात इसी का परिणाम था की विश्व को दो महान क्रांति "अमेरिका का स्वतंत्रता संग्राम" और "फ्रेंच क्रांति" हुई। क्रांतियों ने लोकतंत्र को पुनर्जीवित किया। ये दोनों क्रांति ने लोकतन्त्र को विश्व के समक्ष पुनर्जीवित किया। समय के साथ लोकतन्त्र को मजबूत करने के प्रयास hओटे रहे जिनमे विज्ञान की भूमिका भी सरहनीय रही। विज्ञान के अंतर्गत डार्विन ने विकास की प्रक्रिया में व्यक्ति एवं मानव समुदाय के महत्व पर महत्व देते हुए लोकतन्त्र की जड़े मजबूत करने का प्रयास किया। जिसे दार्शनिको द्वारा भी समर्थन मिलता रहा। दरशींकों का मानना था की लोकतन्त्र में व्यक्ति स्वयं में एक "साध्य" है और इसी दार्शनिक विचारो के फलस्वरूप लोकतन्त्र के अर्थ को वास्तविक अर्थ एवं स्वरूप मिला।

वैश्विक जगत में लोकतन्त्र एवं शिक्षा के आपसी संबंध की गहराई समझने के लिए लोकतन्त्र के वास्तविक अर्थ का समझना उतना ही अवशयक है। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिकन के लोकतन्त्र को लेके दिये अर्थ का संक्षिप्त "प्रजा का शासऩ प्रजा के द्वारा और प्रजा के लिए"। "शासन" शब्द से सर्वानुमत समझ यही प्रतीत होती है की राजनीतिक सुव्यवस्था अर्थात लोकतन्त्र एक प्रकार की शासन प्रणाली तो है अपितु जीवनयापन का सुव्यवस्थित एवं सुद्रढ तरीका है।

सामाजिक परिपेक्ष में अनुभव होता है की लोकतन्त्र एक आदर्श इसीलिए है की व्यक्तिगत एवं सामाजिक सहकार के पूर्ण प्रयास की पूर्ति का सर्वोतम स्तर है। लोकतन्त्र का उद्देश्य वह वयवस्था का निर्माण करना है जिसमे ना तो समाज द्वारा व्यक्ति का शोषण हो और न ही किसी व्यक्ति द्वारा समाज के हितो को हानी पहोचे। अर्थात निचित तौर पर यह स्पष्ट होता है की लोकतन्त्र में व्यक्ति अपe समूह के आँय और समाज के लिए प्रयुक्त कार्यो का श्रेष्ठ हितो के लिए कार्य करके व्यकी स्वयम विकास करते हुए समग्र समाज और देश एवं राष्ट्र का विकास कर सके। लोकतन्त्र की इस श्रेष्ठतम प्रणाली में शिक्षा एवं शिक्षा के जुड़े क्षेत्रो की उपेक्षा संभव नहीं है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति अऔर व्यक्ति से बना समाज अपने ज्ञाऩ रुचियाँ आदर्श शक्तियों एवं कौशल का विकास करती है।

शिक्षा के माध्यम से अर्जित क्षमताओ के माध्यम से व्यक्ति लोकतन्त्र के प्रक्रिया में अपना स्थान निश्चित करने में सक्षम बनता है। व्यक्ति का यह उच्चतम स्थान अनेक प्रयोग करके स्वयम को एवं समाज को भी उच्चतम स्थान की और अग्रेसर करता है। इसी संदर्भ में जे.डब्ल्यू.एच. हैदरिन्गटन के अनुसार लोकतान्त्रिक सरकार की अवशयकता एवं मांग शिक्षित प्रजा की रही है।

देशिक समूह के स्थायी संगठन के प्रारूप में :-

दैशिक सामाजिक समूह के स्थायी स्वरूप में लोकतन्त्र का स्वाभाविक अर्थ समाज की व्यवस्था के सुचारु संचालन से है जिसके अंतर्गत जाति, धर्म, लिंग या अन्य किसी भी भेद पर भेद किए बिना प्रत्येक समाज के व्यक्ति को समाज में अपने विकास के एकसमान अवसरो को प्रदान करने से संबन्धित है। यह एक एसी व्यवस्था है जिसमे समाज को अपनी क्षमता, कौशल एवं योग्यता के आधार पर स्वतंत्र रूप से उन्नति के शिक्षर तक पहोच सकता है। लोकतन्त्र में कई ऐसे विभेदो को समाप्त किया जा सकता है। शिक्षा, समानता, सामाजिक न्याय एवं समान अवसरो के साथ सभी को अग्रेसर करने के समान अवसर जिससे देश, समाज एवं समस्त मानव कल्याण किया जा सके। लोकतन्त्र की व्यवस्था में कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओ को समझना वेशेष अवशयक है।

मुक्तता :- लोकतंत्र का प्रमुख स्तम्भ मुक्तता है। इसके अनुपस्थिति में हम अन्य गुणों को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। इसी कारण विद्वज्ञ इसे समाज के व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार स्वीकारते हैं। मुक्तता स्वच्छंदता नहीं है अपितु मानव सभ्यता में रहकर अपने दायित्वों का निर्वहन एवं अधिकारों का प्रयोग करते हुए इसका उपयोग करना है। यह देशिक समूह का विनियमन है मुक्तता में धार्मिक, राजनैतिक, नागरिक, विचार, भाषण, शैक्षिक आदि की मुक्तता सम्मिलित है।

समानता :- लोकतंत्र का दूसरा प्रमुख स्तम्भ समानता है। समानता से आशय जन्मजात गुणों की समानता से न होकर अवसर की समानता से है। यही सामाजिक न्याय की स्थापना का आधार है।

भ्रातृत्व :- लोकतंत्र का तीसरा प्रमुख स्तम्भ है। यह मुक्तता तथा समानता के बीच संजस्य स्थापित करता है। साथ ही यह भाव मानवीय भावात्मक गुणों के विकास का मुखी आधार है। यही व्यक्ति में मानवता के भाव को विकसित करता है और स्वार्थवृति को नियंत्रित करने में सहयोग प्रदान करता है।

व्यक्ति :-लोकतंत्र का प्रमुख आदर्श व्यक्ति को अनंत मूल्यवान मानना है। यह मानव व्यक्तित्व को सम्मान प्रदान करता है। मानव का महत्व भौतिक वस्तुओं से अत्यधिक है। व्यक्ति की गरिमा एवं प्रतिष्ठा तथा उसकी क्षमताओं पर अधिक महत्व दिया जाता है।

ज्ञान एवं शिक्षा के आलोक में लोकतंत्र :-

विभिन्न नए मानको के साथ मुक्तता़ समानता एव भावनात्मक संकल्पना के साथ शिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रयोग से वर्तमान लोकतन्त्र का आधुनिक स्वरूप अस्तित्व में आया है। ज्ञान के क्षेत्र में शिक्षा के माध्यम से लोकतांत के अनुसार व्यक्तियों के एकसमान अवसरो एवं सुविधाओ की उपलब्धता़ समाज में स्थित शिक्षा के संस्थान जैसे की विद्यालयो में अवशयक मूल्यो के साथ व्यक्तिव विकास की पूर्ति के पूर्ण अवसर की प्रतीति हो सके। नागरिक प्रशिक्षण के अंतर्गत विषयो के चयन की मुक्तता़ रुचि एवं योग्यता और क्षमता के अनुरूप क्रियाशील विधियो के आदान प्रदान से समूहिक विकास एवं अवसरो की प्राप्ति लोकतान्त्रिक लक्षङ्को की पूर्ति का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक भूमिका का निर्वाण कर रहा है।

शैक्षिक अर्थ में लोकतंत्र बालक को प्रधानता प्रदान करके समग्र विकास पर बल देता है। शैक्षिक लोकतंत्र के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए मनुष्य अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। यह मुख्यत: सम्मिलित जीवन का एक सर्वोत्तम प्रारूप है। जिसमें व्यक्ति सहयोगी प्रक्रिया से अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करते हैं। साथ ही सहयोगिक कार्य करते हैं। सम्पूर्ण प्रक्रिया में व्यक्ति को सम्मान प्रदान किया जाता है। सम्मान की पूर्ति के कारण उसे बिना किसी भेदभाव के मुक्तता समानता आदि प्रदान की जाती है। व्यवहरु शब्दों की पुष्टि के लिए डॉ राधाकृष्णन आयोग के शब्दों को प्रस्तुत करते हुए - " लोकतंत्र जीवन की विधि है़ न कि मात्र राजनीतिक व्यवस्था। प्रत्येक नागरिक को जाति़ धर्म़ लिंग़ व्यवसाय़ आर्थिक स्थिति आदि के भेदभाव के बिना एकसमान रूप से स्वतंत्रता एवं अधिकार प्रदान करने के सिद्धांत पर आधारित है।" आर्थिक लोकतंत्र संपति के उचित वितरण पर मुखय बल देता है। आर्थिक सम्पति का वितरण इस प्रकार का हो कि प्रत्येक व्यक्ति को उसकी आवश्यकता के अनुसार उसके श्रम का मूल्य मिले। संबन्धित उत्पादन के संसाधनो पर संपूर्ण देशवासियों के अधिकार की कल्पना की जाती है। साथ ही श्रमकार्य करने के अधिकार पर बल दिया जाता है। इस प्रकार शैक्षिक और आर्थिक लोकतंत्र के सर्वज्ञ में समानता पर बल दिया जाता है।

लोकतंत्र के परिपेक्षय में शिक्षा की अनिवार्यता :-

लोकतंत्र की सफलता के लिए सबसे आवश्यक बातें शिक्षा और उच्च कोटि की राजनीतिक चेतना है। यदि लोगों को राज्य के कार्यों में रुचि नहीं है़ और यदि वे समाज की समस्याओं को नहीं समझते हैं़ तो लोकतंत्र केवल नाम के लिए होता है। लोकतंत्र में जितने भी दोष बताए जाते हैं़ उन सब का प्रमुख कारण शिक्षा का अभाव है। शिक्षा ही लोकतंत्र के नागरिकों को जागरूक बनाती है। और राज्य के कार्यों में उनकी रूचि उत्पन्न करती है।

इसलिए लोकतंत्र में शिक्षा की आवश्यकता के लिए जितना ही कहा जाए थोड़ा है। लोकतंत्र का आदर्श है की व्यक्ति और समाज एक दूसरे की सहायता से पूर्णता को प्राप्त हो। लोकतंत्र न तो समाज द्वारा व्यक्ति के शोषण और ना व्यक्ति द्वारा समाज के हितों की अवहेलना की आज्ञा देता है। दूसरे शब्दों मे़ हम कह सकते हैं कि लोकतंत्र का कार्य समाज को इस प्रकार संगठित करना है जिससे व्यक्ति अपने साथियों और समाज के लिए हित प्रद कार्यो के द्वारा अपने व्यक्तित्व का विकास कर सके। इसलिए लोकतंत्र में शिक्षा की उपेक्षा नहीं की जा सकती है शिक्षा ही व्यक्ति में ज्ञाऩ रुचियां़ आदर्शों और शक्तियों का विकास करती है। इनके विकास से ही व्यक्ति लोकतंत्र में अपना स्थान प्राप्त करता है और उस स्थान का प्रयोग अपने को और अपने समाज को उच्च आदर्शों की ओर जाने के लिए करता है। लोकतंत्र के लिए शिक्षा की आवश्यकता बताते हुए जे. डब्लू. एच. हैदरिंगटन ने लिखा है " लोकतांत्रिक सरकार की मांग शिक्षित जनता है।"

ड्यूवी ने लोकतंत्र के लिए शिक्षा की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए कहां है " लोकतंत्र में इस प्रकार की शिक्षा होना चाहिए़जिससे व्यक्तियों की सामाजिक संबंध और नियंत्रण में व्यक्तिगत रुचि उत्पन्न हो़ और उनमें ऐसी मानसिक आदतों का निर्माण हो़ जीनत से अव्यवस्था उत्पन्न हुई बिना सामाजिक परिवर्तन का होना संभव हो।

शेक्षिक संस्थान में लोकतंत्रीय महोल :-

सामाजिक परिपेक्ष में समाज में शिक्षण संस्थानो में कार्यरत संस्थानो के कर्मचारी एवं उनका उत्तरदायित्व पर विशेष ध्यान केन्द्रित करने की अवशयकता है। साथ ही समानान्तर समूह कार्य एवं संवेगिक अहौंभूति के साथ करुणा पुरवर्क सहभागीदारी के साथ मूल्य के भाव को प्रत इकता देना अनिवार्य है। इन प्रयासो से से सामाजिक अमूह कल्याण सुनिश्चित होने की संभावना है। समाज में शेक्षिक संस्थानो में वास्तविक ज्ञान की दिशा में व्यवहरु ज्ञान से संबन्धित कार्य व्यक्तिगत जीवन को विकसित करने में और साथ कार्य करने वाले नागरिकों के लिए प्रारम्भ किए गए कार्यो और श्रेष्ठ प्रयासो से समाज की समृद्धि एवं प्रगति निश्चित है। शिक्षण संस्थानो को अवशयक है की विद्यार्थियो की जन्मजात क्षमताओ के विकास के साथ युवा वर्ग को समाज के मुख्य धारा के साथ अनुशाशऩ सर्जनतमक एवं भावनात्मक मिलनसार और समूह जीवन के श्रेष्ठ समाज की संकल्पना का निर्वहन कर सके। शिक्षण संस्थान में अध्यायनरत विद्यार्थी प्रशिक्षण और कौशली के साथ दक्षता से योग्यता से युक्त सामाजिक अनुकूलन से साथ अपने दायित्व को संपादित करते हुए लोकतन्त्र के मार्ग को प्रशस्त किया है। पाठ्यचर्यात्मक एवं सहपाठ्यचर क्रियाओ का समन्वय एक प्रारूप में करना उचित है की निकाय से संबंहधित सभी घटक एक

शृंखला में एकरूप होते हुए करी संपादित करे अऔर कोई व्यक्ति या समाज का वर्ग अपने आप को अलग उपेक्षित न समजे अर्थात कोई अपने आप को उत्पीड़ित होने का अनुभव न कर सके। विध्यालय से संबन्धित प्रबंधन समिति और संगठन को सहयोगात्मक एवं सरल माध्यम से सहभागिता युक्त होना चाइए। आधायन से संबन्धित अध्यपन विधीय इस प्रकार से पोषित हो की जिनसे ज्ञान का वातावरण सौहार्द के साथ उचित चर्चाओ एवं तर्कपूर्ण वाद विवाद से प्रेरित हो और प्रोत्साहन मिले। ज्ञान के संस्थानो में मूल्यांकन प्रणाली में तकनीकी प्रयोग का समन्वय़ प्रयुक्त विधियो और प्रक्रियाओ में परदर्शितापूर्ण़ लचीला और सरल एवं वैज्ञानिक होना अनिवार्य है।

विद्यालय जीवनकाल का वातावरण एवं मानव संबंधो की गतिशीलता यह ऐसे श्रेष्ठ कारक है जिनके माध्यम से विध्यार्थी अपने जीवन के उद्देश्यों एवं जीवन मार्ग और मूल्यो के विषय में सारगर्भित शिख प्रप्त कर सकता है। इस बहुमूल्य ज्ञान के आधार पर समाज में व्यक्तिक संबंध एवं व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास निसंदेह प्रभावित होता है। शिक्षण संस्थानो में अर्थात विद्यालयो में प्रप्त अनुभव एकमात्र लोकतन्त्र युक्त जीवन के विकास को जोड़ने का श्रेष्ठ स्थान है। शिक्षा जीवन की तैयारी नहीं है अपितु यह स्वयं जीवन है। विद्यालय के सामाजिक गतिविधि के आलोक में विद्यालय समाज की प्रकृति नहीं है अपितु यह समाज ही है जो आज हमारे अधिकांश शैक्षिक संस्थानो का समाज से संबंध स्थापित करने में प्रयासरत है। वर्तमान अवस्थाए हमारे विद्यालयो में प्रतीत हो रही है यह लोकतन्त्र के विकास के प्रतिकूल अवगत विद्यमान हो रही है। इसी परिपेक्ष में जॉन डीवी के अनुसार विद्यालयो को सक्रिय जीवन में वास्तविक रूप मैये परिवर्तित कर देना अवशयक है। यह केवल संस्था तक सीमित न रहे जहा सिर्फ पठन पाठन की प्रक्रिया ही न हो अपितु संबन्धित लोकतान्त्रिक उद्देश्य को केन्द्रित रखते हुए क्रियाकलाप होते रहे। कई देशो ने इस संदर्भ में प्रयास किए जिनमे इंग्लैंड में ज्ञान के क्षेत्र में केंद्रीय सलहकार परिषद प्राप्त सूचना के अनुसार प्राथमिक शिक्षा की भूमिका एवं कार्यो का गहन विश्लेषण किया गया। इससे प्राप्त लोकतन्त्र से विद्यालय की अहम भूमिका का गर्भित सार बेहद सुंदर प्रस्तुति के साथ किया गया। जिसमे कहा गया की "विद्यालय सोच समझकर विद्यार्थियो के लिए एक सही वातावरण निर्मित करता है जहां सही अर्थो में अपने वास्तविक ज्ञान रूपी तत्व को प्राप्त कर सकते हे तथा उस प्रकार और उस गति से अपना विकास कर सकते हैं जो उनके लिए उपयुक्त है। एवं अवसरों को सम्मान करने और क्षति की क्षतिपूर्ति करने का प्रयास करता है। यह व्यक्तिगत खोज को प्रत्यक्ष अनुभव को तथा सृजनात्मक कार्यों के अवसरों को विशेष महत्व प्रदान करता है। जिसके अंतर्गत उपलब्ध कराने की सर्वोच्च प्राथमिकता उपलब्ध करता है। इसका महत्व इस बात पर समझा

जाता है कि ज्ञान् सुव्यवस्थित रुप से पृथक पृथक उपखंडों में नहीं बांटा जाना चाहिए तथा कार्यों और खेल के विपरीत नहीं है बल्कि एक दूसरे के पूरक हैं। कोई विद्यार्थी जो अपनी शिक्षा के सभी स्तरों पर इस प्रकार के वातावरण में विकसित करता हो उससे कुछ आशा हो सकती है कि वह एक संतुलित तथा परिपक्व नागरिक बने तथा इस योग्य हो सके कि समाज को योगदान देने तथा उसकी समीक्षा करने के लिए जी सकें।"

लोकतंत्र और शिक्षक :-

लोकतंत्र के समाज के विद्यालयों में गुरु का स्थान एक मित्र् पथ प्रदर्शक समाज सुधारक तथा नेता के रूप में होता है जिससे वह अपने छात्रों तथा समाज का समुचित रूप से पथ प्रदर्शन कर सकें। ज्ञान के क्षेत्र में शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि और समाज में वास्तविक परिवर्तन लाकर उसे प्रगति की ओर अग्रसर करें।इसके लिए उन्हें कुछ मुख्य गुणों की अवशयकता के साथ साथ कार्य किया जाता है। पहला वह एक योग्य नागरिक हो तथा लोकतंत्रींय आदर्शों मूल्यों एवं सिद्धांतों में पूर्ण निष्ठा रखता हो। दूसरा उसने अपने छात्रों को समझने तथा उनको पथ प्रदर्शित करने की क्षमता हो् जिससे वह उनको एक योग्य नागरिक बनाने में सफल हो सके। तीसरा् वह लोकतंत्री आदर्शों के अनुसार प्रशिक्षित किया गया हो। चौथा् इस बात में आस्था रखता हूं कि वातावरण वंशानुक्रम से अधिक महत्वपूर्ण है। पांचवा् और इस सिद्धांत में विश्वास रखता हो कि प्रत्येक नागरिक दूसरे नागरिक या व्यक्ति से भिन्न होता है। इस कारण प्रत्येक व्यक्ति पर व्यक्तिगत रूप से विशेष ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है। छठा् इस बात में विश्वास रखता हो कि प्रत्येक व्यक्ति को सत्य् असत्य् सुंदर या असुंदर् अच्छे या बुरे का निर्णय करने का अधिकार है। साथ ही और नैतिक रूढ़ियो एवं मूल्यों को निर्मित करने का अधिकारी भी हो। और ऐसे उच्च चरित्र निर्माण करने का व्यक्ति होना चाहिए जिससे वह समाज तथा छात्रों के साथ सभी वर्गो का सम्मान प्राप्त कर सके और अपने उदाहरण एवं सिद्धांतों द्वारा नेतृत्व करने में सफल हो सके। जे.एस.रौस के अनुभव के आधार पर उनके अनुसार "विद्यालय शब्द पुरुषों द्वारा विकसित वे संस्थान है जिसका उद्देश्य युवाओं को अच्छी तरह से समायोजित और समाज के कुशल सदस्य बनाने की तैयारी में सहायता करना है।" स्कूल समाज द्वारा स्थापित ऐसी संस्था है जिसका प्रयोजन युवाओं को समाज में भाग लेने के लिए तैयार करना है। स्कूल का मौलिक चरित्र उसे समाज द्वारा निर्धारित किया जाता है् जिसका यह काम करता है। विश्व राजनीतिक प्रणाली के सबसे बड़े लोकतंत्र ओं में से भारत एक है। स्कूल् जबकि यह एक संपूर्ण इकाई के रूप में समाज से संबंधित है। स्वयं के द्वारा एक छोटे से समाज का प्रतिनिधित्व करता है। यही कारण है कि हम स्कूल को एक छोटा समाज कहते हैं। शिक्षक् छात्र और इस छोटे से समाज के अन्य सदस्य अपने तरीकों से इसमें क्रियात्मक

तथा रचनात्मक भाग लेते हैं स्कूल की कार्य संस्कृति में जिम्मेदारी और भूमिकाओं की अपनी एक विशिष्ट प्रणाली है। इस तरह से यह श्रेष्ठ संस्थाओं का प्रतिनिधित्व करता है। इस अर्थ में किसी भी सामाजिक पृष्ठभूमि से आने वाले किसी भी छात्र को उस सीमित अवध के लिए जिसके दौरान वह स्कूल में रहता है स्कूल के नियमों और भी नियमों का पालन करना होगा और स्कूल के ही स्वतंत्र सामाजिक परिवेश को समायोजित करना होगा। यह एक विकल्प है जो ज्ञान प्राप्त करते विद्यार्थियो को उस बड़ी सामाजिक संरचना की ओर अग्रेसर करते हैं जिससे वे व्यावहारिक संबंध रखते हैं। ज्ञान के संस्थान ऐसे विध्यालय ऐसी जगह है जहां शिक्षार्थी उन प्रश्नों का अभ्यास करते हैं जो समाज के सुचारू प्रकिरया एवं कामकाज की सफलता के लिए आवश्यक है। अगर हम जॉन डीवी की परिभाषा को स्वीकार करते हैं कि "शिक्षा जीवन है" तो हमारे जीवन के हर पल, हर क्षण हमें एक या अन्य रूप में कुछ शिक्षा आदान प्रदान सुचारु माध्यम से करते हैं।

सारांश

लोकतंत्र के उत्कर्ष के लिए देशिक एकत्व का भाव विकसित होना अनिवार्य है। राज्य की सरकार यह प्रयास कर रही है कि सभी नागरिक जातीयता, प्रांतीयता तथा भाषा आदि के भेदभाव से ऊपर उठकर एकसूत्र में बंध जाएं। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जहां एक ओर देश के सभी बाल समूह की शिक्षा की व्यवस्था किया जाना, वहीं दूसरी ओर प्रौढ़ शिक्षा की व्यवस्था भी की जा रही है। इसमें संदेह नहीं है कि भारतीय जनतंत्र को सफल बनाने के लिए केंद्रीय तथा राज्य सरकारी संयुक्त प्रयास कर रही है। परंतु इतना सब कुछ होते हुए भी देश की जनता में जनतंत्र के आदर्शों एवं मूल्यों को विकसित उस स्तर तक नहीं किया जा सका है। और लोकतंत्र में शिक्षा की अनिवार्यता एव गहराई को समझना चाहिए जिससे परिणाम स्वरूप लोकतांत्रिक शिक्षा की प्रवृत्ति को आगे और विस्तृत किया जा सके।

संदर्भ

१. राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा (२000ह्र एनसीईआरटी़ नई दिल्ली।

२. राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा (२00५ह्र. एनसीईआरटी़ नई दिल्ली।

३. विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (१९४८४९ह्र नई दिल्ली़ शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार।

४. माध्यमिक शिक्षा आयोग़ नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार।

५. राजपूत़ जेएस़ ह्यएनसाइक्लोपीडिया)-२00४ एनसीईआरटी़ नई दिल्ली।

६. डीवी़ जान (१९६३ह्र लोकतंत्र एवं शिक्षा।